राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक ६] तृतीय विधान सभा के नवम् सत्र, १९६६ का प्रथम दिवस [संख्या १

शनिवार, दिनांक २६ फरवरी, १९६६

विधान सभा की कार्यवाही विधान सभा भवन, जयपुर में म. प. १२.२७ बजे प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

सदन की मेज पर रखी गई राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति

सचिव, विधान सभा (श्री अनोपसिंह) : महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की एक प्रति सदन की मेज पर रखता हूं।

(कृपया परिशिष्ट १ देखिये)

स्वर्गीय प्रधान मंत्री, श्री लालबहादुर शास्त्री एवं उप-मंत्री, श्री भवानीशंकर नन्दवाना के प्रति श्रद्धांजलियां

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के समक्ष हमारे देश के महान् व्यक्ति, स्वर्गीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री, के अचानक देहावसान की वजह से जो सारे देश को क्षति पहुंची और वेदना पहुंची-उसके सम्बन्ध में एक प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

"हमारे देश के प्रधान मंत्री, भारतरत्न श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर यह सदन हार्दिक दुःख एवं गहरी वेदना प्रकट करता है।

महात्मा गांधी हमारे देश के लिए आजादी लाये, नेहरूजी ने उसे दृढ़ता प्रदान की और शास्त्रीजी के प्राणवान नेतृत्व में देश ने एशिया और विश्व में एक स्वतन्त्र राष्ट्र का गौरव अर्जित किया। शास्त्रीजी के कार्यकाल में भारत को पाकिस्तान से एक व्यापक स्तर पर संघर्ष करना पड़ा। शास्त्रीजी के सुयोग्य नेतृत्व में देश ने जिस दृढ़ता और संयम से इस आक्रमण का मुकाबला किया उसने दुनिया में यह सिद्ध कर दिया कि भारत अपने चिरवांक्षित सिद्धांतों, आदर्शों, स्वतन्त्रता व प्रादेशिक सार्वभौमिकता की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए दृढ़ संकल्प है। उस संकटकालीन दौर में शास्त्रीजी की हर आवाज के पीछे समस्त भारतीय जनता की सहमति और हर कदम के साथ जन-जन का मनोबल रहा क्योंकि शास्त्रीजी सच्चे अर्थों में जनता के प्रतिनिधि बन गये थे।

जीवन भर उनकी अहिंसा में आस्था रही लेकिन जब पाकिस्तान ने हमारी पवित्र भूमि पर आक्रमण किया और हमारी स्वतंत्रता और प्रादेशिक अखंडता को खतरा हो गया तो क्षण भर भी हिचकिचाहट न कर उन्होंने हमारी सेनाओं को आक्रमणकारियों को निकाल बाहर करने का आदेश दिया।

Page No. 2

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

शास्त्रीजी मूल रूप में शान्ति प्रिय व्यक्ति थे और इस खोज में वे ताशकंद गये और अन्ततः अपने शान्ति प्रयत्नों में सफल हुए। न केवल हमारे लिए बल्कि समूचे विश्व के लिए यह बड़ी हृदय विदारक बात थी कि हमने शास्त्रीजी को उनके शान्ति प्रयत्नों में सफल होने के तुरन्त बाद ही खो दिया।

शास्त्रीजी अपने देश को सम्पूर्ण हृदय से प्यार करते थे और उनका सारा जीवन ही देश की सेवा के लिए अर्पित था। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धान्जली यही हो सकती है कि अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में हम उनका अनुसरण करें और वह शान्ति सुनिश्चित बनायें जिसके लिए वे प्रयत्न करते हुए इस संसार से चले गए। यह सदन अपने स्वर्गीय प्रधान मंत्री के प्रति आदरपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित करता है और श्रीमती लालबहादुर शास्त्री तथा परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है। उनकी स्मृति के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु बिना कुछ कार्यवाही किये सदन की आज की बैठक स्थगित की जाय।"

मैं, अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर इस बात की तरफ भी रेफरेन्स किये बिना नहीं रह सकता कि हमारे इस सदन के एक सदस्य एवं हमारे मंत्रि-मण्डल के भी सदस्य, श्री भवानीशंकरजी नंदवाना का, एक लम्बे समय से बीमारी भुगतने के बाद, देहावसान पिछले सदन की बैठक के पश्चात् और आज की बैठक के पहले हो गया।

वे युवा काल से ही देश की स्वतन्त्रता के संघर्ष में अपने आपको लगाये हुए थे। सन् १९३८ में जो अलग अलग राज्यों के अन्दर आन्दोलन हुए उस समय वे जेल गये। सन् १९४२ में वे कारावास में भेजे गये और उसके बाद कम उम्र के अन्दर ही उन्होंने यहां पर, जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई, उसको तत्परता के साथ निभाया।

उनकी बीमारी काफी भयंकर थी। काफी प्रयत्न किये गये। लेकिन आखिर हमारे बीच से चले गये। मैं उनकी आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी अपनी सम्वेदना प्रगट करता हूं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर): अध्यक्ष महोदय, भारत रत्न श्री लाल बहादुर जी शास्त्री, स्वर्गीय प्रधान मंत्री, का ताशकन्द में एकाएक निधन होने के कारण देश को बड़ी क्षति पहुंची है।

श्री लालबहादुर जी राज्य सभा में सन् १९५२ से ५८ तक सदस्य थे। उस समय मैं भी राज्य सभा में था। वे कुछ समय तक रेल्वे मंत्री भी थे। रेल्वे में एक आकस्मिक दुर्घटना के कारण, रेल्वे एक्सीडेन्ट होने के कारण, उन्होंने त्याग-पत्र देकर देश के समक्ष एक उज्ज्वल और उच्चकोटि की परम्परा कायम की। वे सादगी पसन्द, हंसमुख और हाजिर जबाब नेता थे और मैं समझता हूं कि वे परम निष्ठावान् पुरुष थे, absolutely uncorruptible he was अट्ठारह महीनों तक प्रधान मंत्री रहे और जिस दृढ़ता, जिस दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के साथ उन्होंने अपना उत्तरदायित्व पूरा किया वह चिर-स्मरणीय रहेगा। देश उस समय संकट-कालीन स्थिति के अन्दर गुजर रहा था और उस समय उनका नेतृत्व, जो प्रेरणादायक नेतृत्व देश को मिला और उसके परिणाम-स्वरूप देश में एकाग्रता की भावना उत्पन्न हुई उसका श्रेय बहुत कुछ हद तक स्वर्गीय

Page No. 3

(महासबल श्री लक्ष्मण सिंह)
प्रधान मंत्री, श्री लालबहादुरजी शास्त्री को मिलेगा। देश उनका ऋणी है।

वे ताशकन्द गये और ताशकन्द में उन्होंने जिस महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किये उस समझौते को हमें दूरदर्शिता, निष्पक्षता और वास्तविकता से देखना चाहिये; भावुकता से नहीं देखना चाहिये। सम्भवतः वह समझौता अन्य देशों की उलझनों को सुलझाने के लिए सार्थक हो।

श्री शास्त्रीजी की आत्मा एक छोटे से शरीर के अन्दर निहित थी किन्तु जाते जाते उस आत्मा ने विश्व को अपना विराट स्वरूप बताया। ऐसी आत्मा के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक-संतप्त परिवार और खास करके श्री ललिता देवीजी के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रगट करता हूं।

इन शब्दों के साथ इस प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूं।

मुख्यमंत्रीजी ने श्री भवानीशंकरजी नन्दवाना के सम्बन्ध में जो कुछ कहा उसका भी मैं समर्थन करता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से लेकर आज तक कितने भी महान् व्यक्ति हुए हों–विधि के विधान के अनुसार जो आया है उसे जाना ही पड़ा है। परन्तु कुछ लोगों का जाना लोगों को इतना अखरता है कि उनकी याद रह रह कर हो आती है। स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री लालबहादुरजी शास्त्री का निधन उस प्रकार की विभूति का जाना है जिनकी याद आज ही नहीं आयेगी बल्कि इस देश में जब जब अनेक ऐसे मौके आयेंगे तो लोगों को उनकी स्मृति हो आवेगी। इन प्रकार के अल्प काल में सम्पूर्ण देश के स्नेहभाजन बने। मनुष्य तो वही है जो स्वजनों का ही नहीं अपितु विरोधियों का भी स्नेहभाजन बन सके, उनसे भी प्रशस्ति प्राप्त कर सके। श्री लालबहादुरजी ऐसे व्यक्ति थे जो अपने दल का ही विश्वास प्राप्त करने में सफल नहीं हुए बल्कि दल से ऊपर उठ कर अन्य विरोधी दलों, विरोधी विचारधारा वाले लोगों का भी विश्वास प्राप्त करने में सफल हुए। यह उनका लोकतन्त्रवादी होने का, उनका मानवतावादी होने का, उदारतावादी होने का लक्षण है।

मैं समझता हूं हम लोग, जो इस विधान सभा के सदस्य हैं, के समक्ष और इस लोकतन्त्र के परिचक्र में अनेक ऐसे दृश्य या ऐसे मौके आते रहेंगे जबकि विरोधी पक्षों के ऊपर या यह कहना चाहिए लोकतन्त्र के ऊपर कुछ आघात होते रहेंगे, जो नहीं होने चाहिए–तब उनकी याद आती रहेगी। एक बड़ी स्वस्थ परम्परा का निर्माण उन्होंने इस देश में किया। उसी परम्परा को बनाये रखना, मैं समझता हूं, उनके प्रति सबसे अच्छी श्रद्धांजली होगी।

श्री शास्त्रीजी का जीवन कितना सात्विक था, कितना सरल था, वे कितने अडिग थे, कितने उदार थे–यह तो जो उनसे मिला उसको स्वयं एक क्षण में आभास हो गया होगा।

मुझे भी शास्त्रीजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जब कि वे २८ अक्टूबर को जयपुर मे आये। जयपुर में सभी नागरिको की बनी कमेटी की तरफ से उनका स्वागत किया गया। वे सबसे बिना किसी

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)
भेद-भाव के मिले और विचारों का आदान-प्रदान हुआ। मैं समझता हूं कि जो रुख शास्त्रीजी ने रखा उसे अपने जीवन में उसका पालन किया जाय तो मैं समझता हूं कि उनको सच्ची श्रद्धांजली होगी। अगर शास्त्रीजी ने जो सार्वजनिक लोगों के लिये काम किया और हमारे देश के लिये काम किया उसी प्रकार के गुण-संचय इस देश के नेताओं ने किया तो मैं समझता हूं कि हमारे देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल होगा। श्री शास्त्रीजी शब्दों तक ही सीमित नहीं थे, लेकिन वे अपने आचरणों के द्वारा, जीवन में उन्होंने आदर्शों को ऊपर उठा कर जिस प्रकार के विचार और आचार थे उनको सारी मर्यादाओं को अपने जीवन में साथ लेकर चलते थे। मैं समझता हूं कि इसी कारण इतने थोड़े समय में वह व्यक्ति कितना ऊंचा उठा। मैं समझता हूं कि अमेरिका में नहीं, दुनिया में मैं समझता हूं कि किसी भी राजनीतिज्ञ ने ऐसा काम नहीं किया होगा। दुनिया की सारी आंखें भारत की तरफ केन्द्रित हो गई। इसी कारण ऐसा हुआ कि हिन्दुस्तान के लोग कहने लगे कि यह तो एक व्यक्ति का गुण है कि जितने हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, जिनको हमारे देश के सभी लोग प्रिय मानते थे, कहने लगे कि उसने १८ वर्षों में वह काम नहीं किया जो शास्त्रीजी ने १८ महीनों में किया। किस प्रकार से उन्होने देश की भावना को मूल रूप दिया और मैं आशा करता हूं कि जो अधूरी चीज है उसको यह देश पूरा करेगा। मैं समझता हूं कि शास्त्रीजी को देश में ही नहीं विदेशों में भी श्रद्धांजली दी है और उनके शव-यात्रा में लाखों लोग शामिल हुए और मैं समझता हूं कि जितना सम्मान शास्त्री जी को मिला उतना विश्व के इने-गिने नेताओं को प्राप्त हुआ होगा, यह मेरी मान्यता है। इसलिये मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से दिवंगत आत्मा को और उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे। साथ ही साथ मैं उनके शोक संतप्त परिवार के साथ अपने दल की ओर से अपनी सम्वेदना प्रकट करता हूं।

और दूसरे अपने एक माननीय सदस्य श्री भवानीशंकरजी नन्दवाना, जो राज्य में उप-मंत्री थे, उनका भी निधन इस काल में हुआ उनके प्रति भी सम्वेदना प्रकट करता हुआ अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री रामकिशन (वैर) : अध्यक्ष महोदय, आज जो प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत हुआ है उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूं।

मैं समझता हूं कि संसार में १८ महीनों का शासन-काल इतना महत्वपूर्ण नहीं बन जाता जितना स्वर्गीय श्री लालबहादुरजी शास्त्री का १८ महीनों का प्रधान मंत्रित्व-काल महत्वपूर्ण हो गया है। उन्होंने इतने कम समय में इतनी सफलतायें प्राप्त कीं इसका क्या कारण था? इसका कारण, मैं समझता हूं, श्री लालबहादुर शास्त्री भारत की साधारण जनता के प्रतिनिधि बन कर उस आसन पर बैठे जो लोकतन्त्र का सबसे बड़ा आसन हो सकता है। इतने उच्च स्थान पर रह कर भी वे जनता की आवाज को सुन सकते थे और जनता के हित और कल्याण के कार्यों को गम्भीरता और बारीकी से देखते थे।

मुझे श्री शास्त्रीजी से मिलने का कई बार मौका मिला। जब हम लोग बनारस में

(श्री रामकिशन)

सोशलिस्ट पार्टी के नेता, आचार्य श्री नरेन्द्र-देवजी के यहां जाते थे तब कई बार उनसे मुझे मिलने का मौका मिला और उन दिनों जो मुझ पर उनका प्रभाव पड़ा उसके कारण मैं ऐसा सोचता था कि शास्त्रीजी एक ऐसे व्यक्ति हैं जो किसी महत्वपूर्ण पद पर रह कर कोई निर्णय स्वयं नहीं ले सकेंगे। इसी कारण जब वे हिन्दुस्तान के प्राइम मिनिस्टर बने, उसके बाद खादी के सिलसिले में मुझे उनसे मिलने का मौका मिला। उस समय में हरिभाऊजी के साथ था और मैंने एक मजाक के तौर पर कहा था कि बहुत कमजोर प्रधान मंत्री बने हैं। उस समय भी मेरी यहा धारणा थी कि ये बहुत कमजोर प्राइम मिनिस्टर रहेंगे और उनके लिए किसी भी खास नतीजे पर पहुंचना हमेशा बड़ा मुश्किल रहेगा लेकिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मामले में जो नीति और विचारधारा हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू की थी, उससे बिल्कुल पृथक और मौलिक नीति और विचार स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्रीजी के थे।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में जो ताशकन्द समझौता हुआ है, हो सकता है। उसके सम्बन्ध में हमारे कुछ मतभेद हों लेकिन इस सिलसिले में जब तक वे हिन्दुस्तान के बाहर नहीं गये हम विश्वास करते थे कि कहीं कोई ऐसा समझौता न हो जाय. जो भारत के लिए बिल्कुल सम्मानजनकन हो और इस सम्बन्ध में देश में तरह तरह की आलोचनायें होती थीं। लेकिन मौका मिलने पर जो उन्होंने देश के सम्मान और विश्व के अन्दर शांति स्थापना के लिए महत्व-पूर्ण कार्य किया उसके कारण आज हमारा यह देश विश्व के अन्दर एक बहुत ही महत्वपूर्ण देश बन चुका है। खास तौर से ऐसे समय में जब हमारा अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान से संघर्ष चल रहा था उस समय एशिया का कोई देश और अमेरिका, कोई भी देश हमारा साथ देने को तैयार नहीं था। वैसी स्थिति में भी इन १८ महीनों के अल्प शासन-काल में उन्होंने इस देश को हर दिशा में विकसित किया और दृढ़ता और आत्म-विश्वास से पाकिस्तान को यह मानने के लिए विवश कर दिया कि पड़ौसी देश को एक दूसरे के साथ शांति से रहना चाहिए।

मैं स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री, की महान् आत्मा के प्रति अपनी श्रृद्धांजली अर्पित करता हूं।

जहां तक स्वर्गीय श्री भवानीशंकर नन्द-वाना का सम्बन्ध है उनके लिए हमारी मूक श्रृद्धांजली हो सकती है क्योंकि वह एक मूक सेवक थे। जिस समय सोशलिस्ट पार्टी बनी थी उस समय वे उसके भी सदस्य थे। मैं स्वर्गीय श्री भवानीशंकर नन्दवाना को भी श्रद्धांजली अर्पित करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री शास्त्रीजी ने अपने अल्पकाल में, प्रधानमंत्रित्व काल में हमारे तमाम राष्ट्र का, तमाम जनता का सम्मान प्राप्त किया है और मैं समझता हूं कि भारत के इतिहास में वह एक बेमिसाल चीज बन गई है। शास्त्रीजी ने इतने अल्प समय में इतना सम्मान प्राप्त किया उसका कारण हमारे देश की जो परम्परायें, हमारी जनता की इच्छाओं को सही तरीके से व्यक्त करने में वे सफल हुए। एक ओर दृढ़ता और दूसरी ओर शांति, इन दोनों का

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

समन्वय, इन दोनों नीतियों पर किस तरह से कार्य किया जा सके, उसको उन्होने केवल थ्योरी के रूप में नहीं माना, बल्कि अमली रूप से करके दिखाया कि हिन्दुस्तान की जनता किन्हीं दूसरे देशों पर आक्रमण करना नहीं चाहती, उसके साथ मित्रता पूर्वक रहना चाहिए, यह हिन्दुस्तान की जनता की परम्परा रही है; परन्तु उस पर कोई आक्रमण करे, उसको कोई आंख दिखाये तो हिन्दुस्तान की जनता बहुत शांतिप्रिय होते हुए भी सम्मानपूर्ण तरीकों से रहना चाहती है और रहना जानती है और अपने आक्रमण की रक्षा करना जानती है। इस बात को हमने हमारे देश में साबित करके दिखाया शास्त्रीजी के प्रधान मंत्रित्व काल में और मैं समझता हूं कि इससे बड़ी देन, जिसने इतिहास में चका-चौंध पैदा कर दी कि कोई देश अपनी विजय के पथ पर है। १८ वर्षों से किसी पड़ोसी ने लगातार जिसको तंग किया है और फिर उससे लड़ाई में मुठभेड़ होने पर बहुत महत्वपूर्ण स्थानों पर हमारी फौजें पहुँच गई हों उस विजय के समय में भी अपने देश की परम्पराओं की नीति को नहीं छोड़कर, साहस के साथ शांति के कदम को बढ़ाया। मैं समझता हूं कि दुनिया में जो बड़े बड़े राजनीतिज्ञ विजय में बावले हो जाते हैं, पागल हो जाते हैं, शास्त्रीजी ने ऐसे समय पर भी अपनी नीति को नहीं छोड़ा। इसमें कुछ लोगों का मतभेद हो सकता है। लेकिन मैं समझता हूं कि लड़ाई के समय साहस और दृढ़ता उन्होंने दिखाई और शांति के समय दोनों देशों के बीच शांति कायम करके ताशकन्द का - समझौता करके दुनिया को चका-चौंध कर दिया और दुनिया को दिखा दिया कि जहां हिन्दुस्तान एक ओर मुकाबला कर सकता है वहां हिन्दुस्तान की जनता वास्तव में उदार है, हिन्दुस्तान की जनता अपने पड़ोसियों से प्यार करती है और अमन से रहना चाहती है। किसी का इलाका हम दबालें तो उसके बारे में हम पागल हो जावें और अपनी नीति को छोड़ दें। हम जैसा कहा करते थे आजादी आने के बाद हम अपनी नीति पर चलें, उसको अमली जामा पहना कर शास्त्रीजी ने दिखाया। मैं समझता हूं कि यह शास्त्रीजी की बड़ी महानता है और इस रूप में मैं समझता हूं शास्त्रीजी को हमारे देश में सबसे बड़ी श्रद्धान्जली अगर हम अर्पित कर सकते हैं तो जो कार्य उन्होंने किया, जिसको दुश्मन और दोस्त, सबने सराहा, जो ताशकन्द की स्पिरिट को हमारे देश और पड़ोसी देश में पैदा की, जिस ने १८ वर्षों में हमारे साथ सिवाय लड़ाई के कुछ नही किया, बात बात में सिवाय बन्दूक दिखाने के कुछ नहीं किया, दस दिनों में ही वहां के भाषण बदल गये, बात-चीत बदल गई, सारी हवा बदल गई और इस तरह उसने महसूस किया कि लड़ाई से हम आगे नहीं बढ़ सकते। भुखमरी, बेरोजगारी गरीबी और अभाव से हमारी लड़ाई है। जो लोग हमें लड़ाते हैं उनसे हमें आगाह होकर आपसी सब समस्याओं को हमें हमें शान्ति से हल करना है।

इस सम्बन्ध में, अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं जिस चीज का हमको खुद को विश्वास नहीं था कि 'No war pact' हो जायेगा वहां उन्होंने दृढ़ता के साथ दुनियां को बता दिया

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

कि हम दृढ़ आत्म-विश्वास के साथ अपने पड़ौसियों के साथ समझौते में इस तरह आगे बढ़ सकते हैं। यह मैं समझता हूं यह शास्त्रीजी के प्रति हमारी सबसे बड़ी श्रद्धान्जली होगी कि हमारे पड़ौसियों से सम्बन्ध सुधारने में हम इस प्रकार दृढ़ आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ें। चीन ने हालांकि हमें बहुत परेशान किया है, पर उससे भी समय आने पर हमें इसी प्रकार की बातचीत करनी चाहिये। पाकिस्तान से भी हमें कोई उम्मीद नहीं थी, वह १८ वर्षों तक हमसे लड़ता रहा, हजारों की जानें गई। पर गांधीजी जैसा कि कहा करते थे हमारी अहिंसा मजबूती की अहिंसा होनी चाहिए, इसी स्पिरिट को बढ़ाते हुए तमाम पड़ौसियों से, चीन से भी, इस तरह का मौका पड़ने पर बात-चीत करें और इस तरह का शान्ति पूर्ण, इज्जत का समझौता करने का हिन्दुस्तान को प्रयत्न करना चाहिए। एशिया, लेटिन अमेरिका जो भी साम्राज्यवाद के पंजे के नीचे दबे हुए हैं वे इस मार्ग पर अग्रसर हों, यह देन ताशकन्द समझौते ने दी है। शास्त्रीजी ताशकन्द समझौते के सबसे बड़े एक्टर रहे इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से स्वर्गीय शास्त्रीजी के प्रति श्रद्धांजली अर्पित करता हूं और उनके शौक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता हूं।

इसी समय में हमारे श्री नन्दवानाजी का भी देहावसान हो गया। वे स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक सेनानी थे। इस समय उनका हमारे बीच से उठना हमें ऐसा महसूस हो रहा है कि हमारे बीच का साथी किस तरह शांत, चुपचाप, जो भी गया उसकी समस्या को हर तरह से हल करने की कोशिश की, तो उनके प्रति भी अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता हूं।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री लालबहादुरजी का निधन कुछ ऐसी घड़ियों में हुआ कि जिस समय सारी दुनियां की आंखें उनकी तरफ लगी हुई थीं। लालबहादुर शास्त्री की जहां तक विशेषताओं का सवाल है, मैं समझता हूं हिन्दुस्तान की जनता के लिये, ४५ करोड़ जनता के लिये, एक दफा चीन के हमले के समय ऐसा मौका आया था कि हिन्दुस्तान की जनता का सिर कुछ उस समय शर्म से झुक गया था और उसके बाद में ऐसा मौका भी लालबहादुर शास्त्री ने हिन्दुस्तान की जनता को दिया कि हिन्दुस्तान की ४५ करोड़ जनता का सिर एक दफा ऊंचा हुआ और वह सीना दिखा कर आगे बढ़ने के लायक बनी।

जहां तक लालबहादुरजी के जीवन की विशेषताओं का सम्बन्ध है, मैं समझता हूं उनके जीवन के अन्तिम १८ महीनों में जितना पाया वह यह पाया कि जिस बात को वे कहते थे उसका आचरण स्वयं से प्रारम्भ करते थे। चाहे उन्होंने सोमवार का व्रत रखने को कहा; सबसे पहले अपने परिवार के छोटे-छोटे बच्चों से इसकी शुरूआत की, स्वर्ण बॉण्डों का सवाल आया तो उसे स्वयं ने सबसे पहले किया, इसी प्रकार अधिक अन्न उपजाने का सवाल आया तो स्वयं ने थोड़ी सी जगह में हल जोत कर सारे हिन्दुस्तान को बताया कि जो कुछ हमें कहना है उसको पहले हम अपने जीवन में उतारें। तो उनके जीवन की सबसे बड़ी

(श्री मुरलीधर व्यास)

विशेषता यह थी कि जो कुछ भी वे कहते थे उसको वे अपने जीवन में उतारते थे। सबसे बड़ी श्रद्धा उस महामानव के प्रति हो सकती है तो वह देवता की तरह हो सकती है, वे अपनी जिंदगी में इतनी सादगी से रहने वाले थे और इतने बड़े त्यागी थे कि हिन्दुस्तान के सबसे बड़े से बड़े पद पर बैठ कर भी उस पद के जरिये अपने लिये, अपने परिवार के लिये किसी भी प्रकार का एक पैसे का भी सौदा वे नहीं करना चाहते थे। आज अगर यह सबसे बड़ा गुण, देश की सत्ता के सबसे बड़े से बड़े पद पर बैठने वालों में आ जाय तो हिन्दुस्तान सारी दुनिया में चमक जाय।

मुझे भी उनसे मिलने का मौका एक दफा आया। हम लोग यहां से दिल्ली हमारे राजस्थान के मुख्य मन्त्री के खिलाफ आरोप-पत्र लेकर उनसे मिलने गये थे। सात आठ व्यक्ति थे। समय निर्धारित करने को कहा। समय निर्धारित किया। १० मिनट का समय दिया। बराबर हम उनसे मिले। मिलते समय बड़े स्नेह से मिले, मेमोरेन्डम लिया, एक पन्ना पढ़ कर उल्टा, दूसरे पेज को पढ़ा और फिर पन्ना पलटने लगे और फिर कहा, बहुत लम्बा है। "हमने कहा, हां, लम्बा ही है, लम्बे समय का है, सारे लोकतान्त्रिक तरीकों से हताश हो गये हैं तो आपके पास आए हैं। उन्होंने कहा, ठीक है मनीराम बागड़ी ने उठते उठते कहा, अपनी तरफ से आप क्या कहते हैं, तो कहा, ठीक है, मैंने देख लिया है। जब कहा कि कम से कम जांच तो करेंगे, तो कहा कि दिया है तो करेंगे। इतनी बातें हुईं। दस मिनट के थोड़े से समय में हंस कर बातें कीं, वह आज भी हमारी स्मृति में ताजा हैं।

वह महापुरुष आज हमारे बीच में नहीं है, पर जहां तक उनकी जिन्दगी का सवाल है, जो कुछ देश को उन्होंने दिया है, वह केवल हिन्दुस्तान के लिये ही नहीं तमाम दुनिया को चकाचौंध करने वाला है, आज गांधी जी के बाद में लालबहादुरजी शास्त्री का नाम होता है, दूसरे देशों में लालबहादुर के नाम से होता है. उन्होंने हमारे सारे देश के सिर को ऊंचा किया है।

ताशकंद समझौते में कुछ भी हुआ हो यह एक गहरी कहानी है, पर. जब कहीं प्रायश्चित की बात आती थी, उनके मन को चोट पहुंचती थी तो वे उसका प्रायश्चित करते थे, उसके लिये बड़ी चिन्ता प्रकट करते थे।

हमारे यहां रेल दुर्घटना हुई, वे उसमें के व्यक्ति थे कि उन्होंने फौरन त्याग-पत्र दे दिया। आज कितनी ही हवाई-दुर्घटनायें हो जांय कोई त्याग-पत्र नहीं देता। कोई छोटी सी घटना भी यदि उनके मन्त्रित्व-काल में हो जाती तो वे फौरन अपने पद से त्याग-पत्र देने के लिये तैयार हो जाते थे।

उनके जीवन की कुछ विशेष बातें हैं। उनको यदि हम आज आजाद नागरिक अपने नागरिक जीवन में उतारें तो यह देश आगे बढ़ेगा, फलेगा और फूलेगा। मै उनके संतप्त परिवार को भी अपनी संवेदना अर्पित करता हूं।

श्री नन्दवानाजी भी आज हमारे बीच नहीं हैं। उनको एक लम्बी बीमारी ने बहुत पीड़ा दी और आखिर वह उनको ले बैठी। उनसे सम्पर्क विधान सभा में

(श्री मुरलीधर व्यास)
हुआ। जहां तक मानवीय दृष्टि कोण की बात थी वे कोई भेदभाव नहीं करते थे, सब ही के साथ उच्च भाव से बात करते थे। मैं उनको श्रद्धांजलि तथा उनके शोक-संतप्त परिवार को संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री दुर्गालाल बाड़दार (हवामहल, जयपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के स्वर्गीय प्रधान मन्त्री लालबहादुरजी शास्त्री का पार्थिव शरीर आज हमारे बीच नहीं है। 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय' के अनुसार उस आत्मा ने अपने रूप का परिवर्तन जरूर कर लिया है, लेकिन शास्त्री जी के रूप में जो आत्मा हमारे बीच में विद्यमान थी उसने वास्तविक रूप में भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय रूप प्रदर्शित किया था जो हमारी परम्परा में उच्च माना जाता है। 'आचार्य' उसको कहते हैं जिसका आचरण ऐसा हो जिसको श्रद्धा और चाह के साथ प्रत्येक व्यक्ति पसन्द करता हो; उन्होंने भी जो कार्य अपने जीवन में किये आचार्य के समान थे। जो काम वे करते थे श्रद्धा के साथ लोग उसका अनुकरण करते थे। ऐसे व्यक्ति के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

'लालबहादुर शास्त्री' यह उनका नाम है। माता-पिता को संतानें बहुत होती है लेकिन सपूत होता है उसको 'लाल' कहते हैं। इन्सान बहुत होते हैं, लेकिन साहसी होता है उसको 'बहादुर' कहते हैं। पढ़े-लिखे तो बहुत होते हैं लेकिन शास्त्र को जानने वाले, संतुलित कार्य करने वाले जो होते हैं उनको 'शास्त्री' कहते हैं। मैं उनको अपनी श्रद्धांजली अपने काव्य की भाषा में अर्पित करता हूं—

लाल बहादुर शास्त्री, यथा नाम गुण धाम।
बन सपूत रह साहसी, किये सुसंयत काम॥

यह मेरे इस दोहे में, काव्यमय शब्दों में उनके प्रति श्रद्धांजलि है। मैं यह आशा करता हूं कि हमारे देश के जितने नेता हैं वे उसका अनुसरण करेंगे और ऐसे कार्य करके जनता में बताने की चेष्टा करेंगे जिस प्रकार हमारे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री करते आये थे; यही सच्ची प्रकार की उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी।

जहां तक हमारे साथी, श्री भवानीशंकर नन्दवाना का सम्बन्ध है, वे आज हमारे बीच नहीं हैं। मुझे अभी उनके क्षेत्र में जाने का अवसर आया। उन्होंने अपने क्षेत्र में इतना असर कर रखा था कि किसी भी दूसरे उनके साथी की बात नहीं मानी जाती थी, लेकिन उनकी बात मानी जाती थी। उनका स्वभाव ऐसा था कि लोग उनको बहुत पसंद करते थे और वे लोगों को अपना बना लिया करते थे। उनके सदन में से चले जाने से भी एक बहुत अच्छे साथी का विछोह हो गया है, उसके लिये हार्दिक दुख है। उनके प्रति भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। यही मेरी भावना है।

श्री अध्यक्ष : श्री लालबहादुरजी शास्त्री के आकस्मिक निधन से हमारे देश को एक बहुत बड़ी क्षति हुई है। इस सम्बन्ध में सदन के माननीय नेता ने एक प्रस्ताव रखा है जिसके समर्थन में विरोधी पक्ष के माननीय नेता व अन्य माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे। जो भावनायें प्रदर्शित की गयीं और श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं उनमें मैं अपने आपको भी सम्मिलित करता हूं।

श्री शास्त्रीजी एक बहुत ही सरल व शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे और उन्होंने थोड़े

Page No. 10

(श्री अध्यक्ष)
काल के लिये हमारे देश के प्रधान मन्त्री के पद पर जो काम किये उनसे उनकी बहबूदी में, कार्य-क्षमता में किसी को शक नहीं रहा। चाहे शान्ति में, चाहे लड़ाई में हर समय हमने उनको उच्च कोटि का नेता पाया और जो उनके शान्त और सौम्य व्यवहार से उनको एक कमजोर व्यक्तित्व के रूप समझते थे उनको भी अपनी बड़ी भारी गलती ठीक करनी पड़ी, जैसा कि माननीय सदस्यों ने बताया।

शास्त्रीजी के परिवार की जो स्थिति थी, जिस परिवार में उन्होंने जन्म लेकर और जिस प्रकार अपने त्याग और परिश्रम, ईमानदारी और अपने सरल गुणों से वे आगे बढ़े, मैं समझता हूं कि हमारे भारतीय प्रजातन्त्र की सफलता इससे स्पष्ट होती है कि एक सामान्य परिवार में एक व्यक्ति ने जन्म लिया, कोई विशेष तरीके की सहायता नहीं थी, फिर भी हमारी व्यवस्था के अन्दर वे देश में सर्वोच्च पद पर स्थापित किये जा सके और इससे मैं समझता हूं कि हमारे देश की प्रजातन्त्रीय प्रणाली बहुत सुदृढ़ बनी है।

मैं आशा करता हूं कि जो उन्होंने मार्ग बताया अपने विचारों, सिद्धान्तों से, उनके वे दृढ़ विचार और सिद्धान्त हमारे देश को आगे भी मार्ग प्रदर्शित करते रहेंगे और हम सब उनके गुणों और कार्यों का अनुसरण करते हुए उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की कोशिश करेंगे।

श्री नन्दवानाजी कई साल से हमारी इस विधान सभा के सदस्य थे। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य किया। स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर उन्होंने हर समय कोशिश की कि अपने क्षेत्र की जनता की किस प्रकार तरक्की हो। विधान सभा में ही नहीं, म्युनिसिपैलिटी और जिला परिषद् में भी उन्होंने हमारे देश की और अपने क्षेत्र की सेवा की। उनका इस छोटीसी उम्र में हमारे बीच से उठ जाना एक शोक की बात है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता हूं।

मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे मौन खड़े होकर श्री लालबहादुर जी शास्त्री और श्री नन्दवानाजी को श्रद्धान्जलि अर्पित करें।

(तत्पश्चात् मौन खड़े होकर श्रद्धान्जलि अर्पित की गई)

सदन की कार्यवाही परसों ११ बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. प. १.१० बजे दिनांक २८ फरवरी, १९६६ के म.पू. ११ बजे तक के लिये स्थगित हुई)

Page No. 11

(डा० सम्पूर्णानन्द, राज्यपाल राजस्थान का अभिभाषण)

मित्रों,

मैं आप सब का विधान सभा के इस वर्ष के प्रथम सत्र में स्वागत करता हूं।

२. पिछले दो तीन वर्षों से दुर्भाग्य हमारे पीछे पड़ा हुआ है। श्री जवाहरलाल नेहरू के निधन के शोक एवं आघात से संभलने से पूर्व ही दुर्भाग्य ने श्री लालबहादुर शास्त्री को हमारे बीच से हटा कर दूसरा वज्राघात किया है। १८ महीने से कुछ ही अधिक समय में जब कि वे राष्ट्र के कर्णधार रहे, उन्होंने एक के बाद दूसरे संकट तथा अन्ततः पाकिस्तानी आक्रमण के समय देश को कुशल नेतृत्व प्रदान किया और उसे सुसंगठित एवं शक्तिशाली बनाया। पाकिस्तान से संघर्ष के समय ही देश ने अपनी आधारभूत आन्तरिक एकता का परिचय दिया जब कि समूचा राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय अखण्डता को दी गई चुनौती का सामना करने हेतु एक होकर उठ खड़ा हुआ। इस संघर्ष के वृत्तान्त से यह प्रकट होता है कि किस प्रकार राजस्थान से काश्मीर तक फैले विस्तृत युद्ध-मोर्चे पर वीरता पूर्वक लड़ने वाली हमारी सशस्त्र सेनाओं के प्रयत्नों को सफलता प्राप्त हुई।

३. ताशकन्द समझौता भी स्वर्गीय प्रधान मंत्री के अथक परिश्रम एवं उनके कुशल व्यवहार से ही सम्भव हो सका। इस समझौते को क्रियान्वित किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि जो सद्भावना ताशकन्द में उत्पन्न हुई है वह व्यापक रूप से बढ़ेगी तथा आगे भी मित्रता-पूर्ण पारस्परिक समझौतों को जन्म देगी। हमें उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करना है। स्वर्गीय प्रधान मंत्री की स्मृति में इससे अधिक उपयुक्त श्रद्धांजलि नहीं हो सकती।

४. यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हमारी सशस्त्र सेनाएं मातृ-भूमि की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखने के लिए अत्यन्त वीरता-पूर्वक लड़ीं तथा उन्होंने बलिदान किये। पाकिस्तान से हुए संघर्ष में हमारा राज्य प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुआ। यह अत्यन्त संतोष का विषय है कि राज्य की जनता ने हमारी भूमि पर किये गये आक्रमण से पैदा हुए गम्भीर खतरे का शान्ति और सहनशीलता के साथ सामना किया। जो लोग इस संघर्ष से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं थे उन्होंने भी राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में चन्दा देकर तथा स्वर्ण बोण्ड खरीद कर सहर्ष त्याग किया। यह संघर्ष प्रशासन के लिए— विशेष रूप से जिला प्रशासन के लिए—कसौटी बन गया। सीमावर्ती जिलों एवं जोधपुर नगर को मुख्य रूप से संकट का मुकाबला करना पड़ा। मुझे यह व्यक्त करते हुए प्रसन्नता है कि इन क्षेत्रों में जो लोग अपने कर्त्तव्य में लगे हुए थे उन्होंने अपने को परिस्थितियों के अनुकूल प्रमाणित किया और वे सब हमारी बधाई के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में राजस्थान सशस्त्र आरक्षी-दल विशेष उल्लेखनीय हैं। इस दल के सिपाही एवं अधिकारी, उनके द्वारा इस गम्भीर खतरे के समय कष्टकर क्षेत्रों में प्रदर्शित कर्तव्य परायणता की सर्वोच्च भावना एवं अदम्य साहस के लिए, हमारी प्रशंसा के पात्र हैं। कई स्थानों पर वे सेना के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर लड़े।

(डॉ० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

५. नागरिक सुरक्षा के क्षेत्र में, आपत्-कालीन स्थिति के समय सहायता के लिए होम गार्ड के स्वयंसेवी संगठन को सशक्त किया गया। भरती एवं प्रशिक्षण को सुव्यवस्थित बनाने के लिए कदम उठाये गये। पुलिस प्रशिक्षकों द्वारा तथा राइफल क्लबों द्वारा नागरिकों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग दी गई।

६. सरकार द्वारा युद्ध में वीर-गति प्राप्त सैनिकों के परिवारों के लिए एवं आहत सैनिकों के लिए कई रियायतें घोषित की गई हैं। ये रिआयतें सभी संबंधित व्यक्तियों को दी गई हैं तथा दी जा रही हैं। संघर्ष के समय हमारे जवानों तथा उनके परिवार वालों के लिए जनता में स्वतः ही प्रेम उमड़ रहा था। सशस्त्र सेनाओं के परिवारों की देख भाल करने के लिए शासन द्वारा जो भी सम्भव था किया गया है एवं किया जा रहा है। पाकिस्तान से आये हुए निष्क्रमणार्थियों के पुनर्वास के लिए सरकार द्वारा कदम उठाये गए हैं और आगे भी प्रयास चालू रहेंगे। पाकिस्तानी आक्रमण से पीड़ितों को सहायता एवं पुनर्वास अनुदान देने के लिए भी कदम उठाये गये हैं।

७. इस वर्ष राज्य में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति नियन्त्रण में रही। पाकिस्तान से संघर्ष के समय कानून एवं व्यवस्था रखने तथा आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में पुलिस ने बहुत अच्छा कार्य किया। इस वर्ष ८२ डकैती के मुकदमे दर्ज किए गये जब कि पिछले वर्ष ऐसे मुकदमों की संख्या ९३ थी। ३९ डकैत पकड़े गये। पुलिस की डकैतों से १४ मुठभेड़ें हुईं जिनके फलस्वरूप दो डाकू मारे गये एवं एक ने आत्मसमर्पण किया।

८. अकाल हमारे राज्य में निरन्तर होते रहे हैं। तृतीय पंचवर्षीय योजना काल में प्रकृति का हम पर विशेष कोप रहा। इस अवधि में लगातार तीन वर्ष अभावग्रस्त रहे; यह जानने में आपको दिलचस्पी होगी कि तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में अकाल सहायता कार्य पर हम ९४८.२४ लाख रुपये खर्च कर चुके होंगे, जब कि दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में ८५.५६ लाख रुपये खर्च किये गये थे। इस साल के अकाल के सामने, जो निकट भूतकाल में निकृष्टतम वर्षों में से है, सन् १९६३ की गम्भीर अभावग्रस्त स्थिति भी कुछ नहीं प्रतीत होती। राज्य के २३ जिले अकालग्रस्त हैं तथा राज्य के अधिकांश भागों में पूर्ण दुर्भिक्ष की स्थिति है। बाकी के जिलों में भी फसलें औसत से कम हैं। ४३ प्रतिशत गांव तथा ४१ प्रतिशत जनता अकाल पीड़ित है। भूमिगत जल की सतह नीचे चली गई है जिसके फलस्वरूप तालाब और कुएं सूख गये हैं और सूखते जा रहे हैं। चारे की भी कमी है। हाल में हुई वर्षा से राज्य के उन भागों में जहां रबी की फसल बोई गई है, स्थिति सुधरने की संभावना है; इससे रेगिस्तानी क्षेत्रों में चारे की कमी भी कुछ हद तक पूरी होने की आशा है।

९. इस स्थिति का सामना करने के लिए सरकार ने कई कदम उठाये तथा इस ओर पर्याप्त साधन जुटाये गये हैं। अकालग्रस्त क्षेत्रों में आवश्यक राहत पहुंचाने के लिए सरकार कृत-संकल्प है। अभाव की स्थिति

(डॉ सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)
अनुभव होते ही राहत-कार्य चालू कर दिये गये थे। भू-राजस्व तथा अन्य सरकारी बकाया की वसूली आवश्यकतानुसार स्थगित कर दी गई है। सरकार द्वारा उठाये गये दूसरे कदम मुख्यतः तीन प्रकार के हैं, अर्थात् (१) रोजगार देने के लिए राहत कार्य (२) पेय-जल की व्यवस्था एवं (३) चारे की व्यवस्था।

१०. सरकार की नीति योजना एवं योजना के बाहर के निर्माण कार्य-क्रमों से पूरा लाभ उठाने एवं इन कार्यों तथा राहत-कार्यों में पूर्ण समन्वय रखने की गये है। यह इसलिए आवश्यक है कि इन कार्यों से अभावग्रस्त जनता को रोजगार मिलने के अतिरिक्त उत्पादक कार्यक्रमों को भी बल मिलेगा।

११. वर्तमान अकाल के लिए चारे की आवश्यकता १० लाख मन की आंकी गई है। इसका कारण यह है कि इस वर्ष पिछले वर्षों की अपेक्षा बहुत कम पशु बाहर ले जाये गये हैं; क्योंकि जिन राज्यों में पहले पशु जाते थे वहां भी अकाल की स्थिति व्याप्त है। आवश्यक चारे का लगभग ५० प्रतिशत राज्य में ही उपलब्ध किया जा सकेगा, बाकी चारा दूसरे राज्यों से आयात किया जा रहा है। यह चारा अभावग्रस्त क्षेत्रों में खोले गये चारे के डिपो पर रियायती दरों पर बेचा जावेगा। राज्य सरकार द्वारा मवेशियों के लिये आवश्यकतानुसार खोले जाने वाले शिविरों को स्थापित करने तथा संचालन में स्वयं-सेवी संस्थाओं की सहायता एवं सहयोग का पूर्ण उपयोग किया जावेगा।

१२. अनावृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में पेय-जल की आवश्यकता सर्वोपरि है। पानी खींचने तथा सड़क अथवा रेल द्वारा पानी ले जाने में आर्थिक सहायता देकर पेय-जल की आवश्यक व्यवस्था की गई है एवं की जा रही है।

१३. पहले की तरह अभावग्रस्त क्षेत्रों में सस्ते धान तथा चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था की जावेगी। कई स्थानों में पहले ही सस्ते धान की दूकानें खोल दी गई हैं और आवश्यकतानुसार इनकी संख्या बढ़ा दी जावेगी। श्रमिक-शिविरों में भी ये सुविधायें दी जावेंगी। ऋण तथा अग्रिम की स्वीकृति के लिए—विशेष रूप से चारा खरीदने, कुओं की मरम्मत या गहरा करने तथा इसी प्रकार की अन्य आवश्यकताओं के लिए—प्रावधान कर दिया गया है।

१४. मैंने जो अभी कहा, उससे स्पष्ट है कि खाद्य स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। वर्ष १९६४-६५ में विभिन्न खाद्यान्नों का कुल उत्पादन ५१.७८ लाख टन हुआ। ऐसा अनुमान है कि इस वर्ष का उत्पादन पिछले वर्ष के उत्पादन से ५० प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। इसका कारण मुख्यतः देरी से वर्षा होना, पहली तथा दूसरी वर्षा के बीच असाधारण समय निकल जाना और तीसरी वर्षा का बिल्कुल नहीं होना है। दुर्भाग्यवश सारे देश में स्थिति खराब है, और हमारे राज्य की स्थिति को सारे देश में व्याप्त स्थिति के सन्दर्भ में देखना उपयुक्त होगा।

१५. इस संकट का सामना करने के लिए ज्वार, मक्का, बाजरा तथा चने

Page No. 14

(डॉ० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

गये हैं। वर्ष १९६५-६६ में विभिन्न मोटे अनाजों का संग्रह १.३८ लाख टन किया जा चुका है। इस वर्ष पुनः वर्षा न होने तथा विदेशी गेहूं की कमी के कारण, राज्य के विभिन्न नगरों में विदेशी गेहूं के साथ साथ चना तथा मोटे अनाज भी सस्ते धान की दूकानों पर दिये गये। जिन जिलों में अभाव की स्थिति स्पष्ट हो गई थी वहां खाद्यान्नों का विशेष कोटा भेजा गया। मुझे यह व्यक्त करते हुए प्रसन्नता है कि भारत सरकार भी हमारे विदेशी गेहूं के कोटा को बढ़ाने के लिए यथासम्भव सभी कदम उठा रही है। वर्ष १९६३-६४ के अकाल में अकालग्रस्त क्षेत्रों की आवश्यकता को पूरी करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका सहायता मिशन के माध्यम से गेहूं तथा अमरीकी ज्वार (मीलो) की निःशुल्क सहायता प्राप्त की गई थी। इस वर्ष भी गेहूं व अन्य खाद्यान्नों की निःशुल्क सहायता प्राप्त करने के प्रयास भारत सरकार के माध्यम से चल रहे हैं।

१६. चने तथा मोटे अनाजों के राज्य से बाहर निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है, यद्यपि राज्य सरकार अपने स्टॉक में से दूसरे राज्यों को चना दे रही है। जिला कोटा, बूंदी, भालावाड़, गंगानगर तथा चित्तौड़ जिले के प्रतापगढ़ उप-जिले से खाद्यान्नों का अन्तर-जिला निकास बन्द कर दिया गया है। जिला उदयपुर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर तथा चित्तौड़ (प्रतापगढ़ उप-जिले के अतिरिक्त) का एक क्षेत्र बनाया गया है। इस क्षेत्र (जोन) से बाहर भी खाद्यान्न का निकास निषिद्ध है। इन उपायों से खाद्यान्नों के मूल्य उचित स्तर पर आ गये हैं, इसके अतिरिक्त सरकार मोटे अनाज खुले बाजार में खरीद सकी है। अब तक सरकार द्वारा ८,००० टन मोटे अनाज का क्रय किया जा चुका है और आशा की जाती है कि लगभग २५,००० टन खाद्यान्न का क्रय किया जा सकेगा।

१७. हम अपने आर्थिक विकास के महत्व-पूर्ण अभिसन्धिकाल के समय मिल रहे हैं। एक महीने भर में तीसरी पंचवर्षीय योजना समाप्त हो रही है तथा चतुर्थ योजना के कार्यों का सामना करना है। अतः यह उपयुक्त है कि हम अब तक हुई प्रगति तथा आगे किये जाने वाले कार्यों का मूल्यांकन करें। जैसा कि आप जानते हैं, राज्य की तीसरी पंच-वर्षीय योजना में प्रारम्भ में २३६ करोड़ रुपये खर्च करने का प्रावधान किया गया था। वर्ष १९६२-६३ में इस प्रावधान को घटा कर २०९ करोड़ रुपया कर देना पड़ा। तृतीय पंचवर्षीय योजना का संभावित व्यय २११.६८ करोड़ रुपये होगा।

१८. इस योजना-काल में ५ साल में से ३ साल में वर्षा का अभाव रहना राज्य का विशेष दुर्भाग्य रहा। राज्य की अर्थ-व्यवस्था पर इससे बहुत अधिक भार पड़ा। फलतः राज्य की वास्तविक आय तीसरी योजना के पहले चार वर्षों में १७.२८ प्रतिशत बढ़ी तथा १९५४-५५ के स्थाई मूल्यों के आधार पर प्रति व्यक्ति आय १९६०-६१ में २४१ रु० से बढ़ कर १९६४-६५ में २५७ रु० हुई है, जो कि केवल ६.६४ प्रतिशत की वृद्धि प्रकट करती है। चालू वर्ष की सम्भावनायें निराशा-जनक हैं, क्योंकि राज्य का अधिकांश भाग अकालग्रस्त है।

१९. तीसरी पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन की वृद्धि पर खास जोर दिया गया। के सुरक्षित भण्डार (बफर स्टॉक) बनाये

(डॉ० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

१५ लाख टन अधिक खाद्यान्न उत्पादन की क्षमता के निर्माण करने का लक्ष्य था, उसकी तुलना में सम्भावित उपलब्धि लगभग ११.३४ लाख टन ही होगी। इस कमी का मुख्य कारण विपरीत मौसम; वृहद् तथा मध्यम सिचाई में कमी, आवश्यक सामग्री जैसे उर्वरकों एवं कीटाणुनाशक औषधियों की भारी कमी है। मध्यम एवं लघु सिंचाई जलाशयों में वर्षा की कमी के कारण पानी कम हो जाने से सिंचाई के लक्ष्यों की पूर्ति नहीं हो सकी है। राजस्थान नहर के १.२६ लाख एकड़ की सिंचाई के लक्ष्य की तुलना में सम्भावित उपलब्धि ७०,००० एकड़ हीं होगी। इसी प्रकार वृहद् तथा मध्यम सिंचाई कार्यों से ७.८२ लाख एकड़ के लक्ष्य की तुलना में ५.२६ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि सिंचाई के अन्तर्गत लायी गई है। तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में पहली तथा दूसरी योजना में अधूरे रहे कार्यों को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयास किये गये। चालू वर्ष के अन्त तक लगभग ५०० सिंचाई कार्य, जिनकी सिंचाई-क्षमता २०.३१ लाख एकड़ होगी, पूरे हो जावेंगे। इन नये सिंचाई कार्यों के पूर्ण विकास होने पर जो अतिरिक्त सिंचाई क्षमता सृजित होगी वह भूतपूर्व रियासतों द्वारा निर्मित सिंचाई कार्यों से होने वाली कुल सिंचाई से २२५ प्रतिशत अधिक होगी।

२०. इस समाप्त होने वाले वर्ष के अन्तर्गत नये कुओं के निर्माण, पुराने कुओं की मरम्मत तथा गहरा करने पर काफी जोर दिया गया। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप अतिरिक्त उत्पादन क्षमता का सृजन हुआ है, किन्तु यहां भी वर्षा की कमी के कारण चालू वर्ष में इन कुओं से लाभ उपलब्ध नहीं हो सकेगा—कम से कम उतना तो नहीं जितना अपेक्षित था।

२१. राज्य में भूमिगत एवं संचित जल के पर्याप्त रूप से विशाल साधन हैं। इन साधनों का उपयोग करने के प्रयास किये गये हैं। राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड ने इस वर्ष ८,२७४ कुओं में चट्टान काट कर तथा सुरंगें लगा कर गहरा करने का काम किया। ६४ नये नलकूप लगाये गये जिनकी कुल गहराई १०,३३८ फीट थी। जालोर जिले के भीनमाल-रानीवाड़ा क्षेत्र में कुओं को गहरा करने तथा खोदने के तरीकों एवं भूमिगत जल सम्बन्धी विभिन्न परिस्थितियों में उनमें पानी की मात्रा बढ़ाने के विषय पर अनुसन्धान-कार्य किया गया। संचित जल के प्रयोग के लिए किये गये विशेष प्रयत्नों के फलस्वरूप आरोह-सिंचन (लिफ्ट इरिगेशन) द्वारा १२,००० एकड़ अतिरिक्त भूमि में सिंचाई हुई है। पाताल-तोड़ कुओं (आर्टीजियन वैल्स) के निर्माण हेतु भी ऋण दिये गये।

२२. राज्य सरकार खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाने के लिए पर्याप्त ध्यान दे रही है। राज्य के चुने हुए जिलों में बाजरा, ज्वार, गेहूं, मक्का आदि के लिए गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। यह कार्यक्रम १९६४-६५ में २४ पंचायत समितियों में प्रारम्भ किया गया था तथा चालू वर्ष में अन्य ३९ पंचायत समितियों में इसका विस्तार किया गया है। इन क्षेत्रों में प्रति एकड़ उपज को अधिकतम करने के लिए उन्नत प्रणालियों को समग्र रूप से अपनाने की पद्धति का अनुसरण किया गया है। पूरक खाद्य पदार्थों, जैसे फल एवं सब्जियों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के कार्यक्रम पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

२३. उर्वरकों की मांग अधिकाधिक व्यापक होती जा रही है, किन्तु इनकी राष्ट्र-

(डॉ॰ सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)
घ्यापी कमी के कारण सारी आवश्यकताओं को पूरा करना सम्भव नहीं हो सका है। चूंकि उर्वरकों की कमी अभी कुछ समय तक चलना सम्भावित है, इसलिए सरकार शहरी एवं देहाती क्षेत्रों में खाद तैयार एवं वितरण करने पर अधिक जोर दे रही है। पौध-संरक्षण के उपायों पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है और कीटाणु नाशक औषधियां खरीदने के लिए अनुदान दिया जा रहा है।

२४. चालू वर्ष में बाजरा, ज्वार तथा मक्का की मिश्रित किस्मो को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयोग किये गये; जिनके परिणाम उत्साहवर्द्धक रहे हैं। राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन से इस कार्य-क्रम में मार्गदर्शन एवं सहायता हेतु बातचीत चल रही है।

२५. कुक्कुट-पालन, शूकर-पालन तथा दुग्धशाला विकास की ओर राज्य सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया गया है। मुझे यह व्यक्त करते हुए प्रसन्नता है कि कुक्कुट-पालन क्षेत्र में हमारी उपलब्धियां अत्यन्त उत्साहवर्द्धक हैं। जहां पहिले अण्डों का आयात किया जाता था, वहां अब राज्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है, तथा शीघ्र ही अतिरेक की स्थिति में पहुँच कर पड़ौसी क्षेत्रों की मांग भी पूरी कर सकेगा।

२६. राज्य के ऊन साधनों के विकास पर वर्ष १९६५–६६ में भी विशेष ध्यान दिया जाता रहा। ऊन के वैज्ञानिक कर्त्तन, वर्गीकरण तथा विपणन के कार्य में, जो कि गत वर्ष भारत में पहली बार इस राज्य ने हाथ में लिया, सन्तोषजनक प्रगति हुई है। भेड़-पालकों से सीधे ३२.८ लाख रुपये की ऊन कर्त्तन-केन्द्रों पर श्रमिक कार्य-क्रम के अनुसार खरीदी गई तथा उसे जयपुर एवं नवलगढ़ के ऊन-वर्गीकरण केन्द्रों पर वर्गीकृत किया गया। नवलगढ़ में यह केन्द्र वित्तीय वर्ष १९६५–६६ में प्रारम्भ किया गया है। भारतवर्ष में वर्गीकृत ऊन की पहली नीलामी अगस्त, १९६५, में राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित की गई, तथा दूसरी नीलामी दिसम्बर में की गई। इन नीलामियों में भारतवर्ष भर के बड़े ऊन मिलों ने व्यापक रूप के भाग लिया। इस संगठन को वाणिज्य-पद्धति पर चलाने के लिए एक निगम की स्थापना का प्रस्ताव है, जिसका विस्तृत ब्यौरा तैयार किया जा रहा है।

२७. वन विकास की ओर उपयुक्त ध्यान दिया गया। इस वर्ष ४,३२० एकड़ क्षेत्रफल में वन-रोपण किया गया तथा ८,८०४ एकड़ वर्तमान वन-क्षेत्रों में सुधार किया गया। वन सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से रियायतें दी गईं। ऐसी सहकारी समितियों की संख्या वर्ष १९६४–६५ में ९५ से बढ़ कर अब ११३ हो गई है। राज्य सरकार का उद्देश्य इन सहकारी समितियों को आदिवासी क्षेत्र में वन्य-उपज का विदोहन करने देने का है।

२८. बृहद्-उद्योग क्षेत्र में विकास की गति जो योजना के प्रारम्भिक वर्षों में बन पायी थी, बनाये रखी गई, यद्यपि बिजली की कमी के कारण थोड़ी रुकावट पैदा हुई। यह एक अस्थाई स्थिति है। आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि किशनगढ़ एवं भवानीमण्डी में कपड़े के नये कारखानों,

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

कोटा और जोधपुर में ऊनी कपड़े के कारखानों तथा कोटा में रेयन के कारखाने के अतिरिक्त निम्नांकित कारखानों में उत्पादन प्रारम्भ हुआ है:—

(१) कोटन स्पिनिंग मिल्स, जयपुर.

(२) ए० सी० एस० आर० एवं ए० ए० सी० फैक्ट्री, पीपलियां-कलां,

(३) फोरिण्डर वायर क्लोथ फेक्टरी, जयपुर ।

२९. चित्तौड़ में सीमेण्ट फेक्टरी, तथा कोटा में कोपर अलोय-बेस ट्यूब्स एवं कोपर प्रिण्टिग रोल्स आदि ऐसे वृहद् उद्योग हैं जिनमें निकट भविष्य में उत्पादन प्रारम्भ होने की आशा है । सरकार द्वारा निम्नांकित वस्तुओं के निर्माण के लिए भी औद्योगिक लाइसेन्स दिये गये हैं:—

(१) जयपुर में इलेक्ट्रिक तथा फ्लूरोसेण्ट बल्ब्स,

(२) गंगानगर में रोलर फ्लोरमिल,

(३) हनुमानगढ़ एवं भोपालसागर में सूती कपड़े के मिल,

(४) भीलवाड़ा में वनस्पति पदार्थ,

(५) बीकानेर में ऊनी धागे का मिल,

(६) जोधपुर में गुवार–गोंद फैक्टरी ।

३०. भारत सरकार द्वारा भी जे० के० सिन्थेटिक्स, कोटा, राजस्थान रेयन्स, कोटा, आर० बी० सी० आई०, कोटा तथा कुछ अन्य फैक्टरियों को विस्तार करने के लाइसेन्स अथवा विचार-पत्र जारी किये गये हैं । ब्यावर, बूंदी तथा कोटपुतली में सीमेन्ट फैक्ट्री स्थापित करने के लिए भी विचार-पत्र जारी किये गये हैं । भारत सरकार राजस्थान में राजकीय क्षेत्र में एक मशीन टूल फैक्टरी स्थापित करने पर सहमत हो गई है, और इस फैक्टरी के लिए अजमेर में स्थल निश्चित करने का कार्य भारत सरकार तथा राजस्थान सरकार के सक्रिय रूप से विचाराधीन है । ऐसी आशा है कि शीघ्र ही निर्णय ले लिया जावेगा । सरकार की नीति चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की अवधि में राजकीय क्षेत्र में कुछ और कारखाने स्थापित करने की है ।

३१. ग्रामीण औद्योगीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत चूरू तथा लाडनू में चार-चार सौ कर्घों की ऊनी वस्त्र-इकाइयों की स्थापना की व्यवस्था लगभग पूर्ण हो चुकी है ।

३२. राजस्थान की दस्तकारी की वस्तुओं की विदेशों में मांग बढ़ गई है और राजस्थान लघु उद्योग निगम द्वारा इन वस्तुओं की खरीद के लिए पहले ही से आदेश-पत्र आने लग गये हैं । निर्यात के प्रोत्साहन के लिए राज्य सरकार द्वारा एक निर्यात वृद्धि परामर्शदात्री परिषद् की स्थापना की गई है ।

३३. राजकीय क्षेत्र मे उद्योगों के विकास की ओर भी राज्य सरकार ध्यान दे रही है । डीडवाना में सोडियम सल्फेट के कारखाने में उत्पादन शुरू हो गया है तथा २० टन प्रतिदिन के लक्ष्य की तुलना में उत्पादन की दर १६.५ टन प्रतिदिन है । यह कारखाना भारत में अपने प्रकार का पहला है ।

३४. खनिज क्षेत्र में, अन्वेषण तथा पूर्वेक्षण कार्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई है ।

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)
सोपस्टोन, माइका, बेराइट्स आदि खनिजों के कुल उत्पादन में वृद्धि हुई है। पाली, बून्दी, सिरोही तथा डूंगरपुर जिलों में संगमरमर के नये खनिज क्षेत्र मिलने से संगमरमर उद्योग को नई गति प्राप्त हुई है।

३५. देश में शीशे एवं जस्ते के उत्पादन का गतिवान विकास सुनिश्चित करने के लिए जावर की खानों तथा जस्ता-द्रावक संयन्त्र (जिन्क-स्मेल्टर) को भारत सरकार ने संभाल लिया है। जस्ता-द्रावक संयन्त्र (जिन्क स्मेल्टर) में वर्ष १९६६ में उत्पादन प्रारंभ करने की आशा है। जनसाधारण को परेशानी से बचाने के लिए सामान्य उपयोग के खनिज पदार्थ; जैसे कंकड, बजरी तथा साधारण मिट्टियों के रोयल्टी-वसूली के ठेके देना बंद कर दिया गया है, तथा कृषकों को इन खनिजों पर रोयल्टी देने से मुक्त कर दिया गया है। पन्द्रह हजार रुपये वार्षिक से अधिक आमदनी वाले रोयल्टी वसूली के ठेके समाप्त कर दिए गए हैं और इसके बजाय विभागीय वसूली प्रारम्भ कर दी गई है।

३६. माण्डव-की पाल के फ्लोराइड के विदोहन पर विदेशी विशेषज्ञों से प्राप्त प्रोजेक्ट रिपोर्ट सरकार के विचाराधीन है। इस कार्य को चौथी योजना-काल में प्रारम्भ किया जाना प्रस्तावित है।

३७. विभाग द्वारा डिगाना में तुंगस्तन, गोट मंगलोद में जिप्सम तथा जालोर में संगमूसे का खनन कार्य प्रारम्भ किया गया है। पाली जिले में रणकपुर के पास कुछ चट्टानों से निकल धातु पाये जाने के लक्षण दृष्टिगत हुए हैं, जिनके संबंध में छानबीन की जा रही है। भारत में इस महत्वपूर्ण धातु की कमी है तथा इसके सब सम्भव स्रोतों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। औद्योगिक एवं युद्धोपयोगी खनिजों के विदोहन पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

३८. समग्र रूप से राज्य में इस वर्ष औद्योगिक सम्बन्ध ठीक रहे। मुझे यह जान कर प्रसन्नता है कि बाहरी आक्रमण की चुनौती का सामना करने में श्रमिकों तथा मालिकों ने पूर्ण सहयोग दिया। श्रम के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटना कई अनुसूचित रोजगारों जैसे राजकीय मोटर यातायात, पत्थर तोडने व पत्थर दलने, सडक व भवन निर्माण एवं संधारण, अबरक की खानों तथा स्थानीय निकायों में न्यूनतम वेतन दरों में वृद्धि किया जाना है। मूल्यों में वृद्धि के कारण सरकार ने राजकीय क्षेत्र के उद्योगों में लगे हुए श्रमिकों को एतदर्थ सहायता दी है।

३९. विद्युत् शक्ति के गतिवान विकास के सरकार के लक्ष्य के बावजूद, कुछ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के फलस्वरूप अर्थ-व्यवस्था के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में गतिरोध आया है। पिछले तीन वर्षों में पर्याप्त वर्षा के कारण बिजली पैदा करने वाली बड़ी परियोजनाओं की शक्ति-उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष घटती रही है। इस संबंध में गांधीसागर की स्थिति विशेष रूप से खराब है। राज्य विद्युत् मण्डल को उद्योग तथा घरेलू उपयोग के लिए बिजली में कटौती करनी पड़ी है। इस अभूतपूर्व स्थिति का सामना करने के लिए एक १० मेगावाट का गैस टरबाइन मैसूर से मंगवा कर कोटा में न्यूनतम समय में लगा दिया गया है। ऐसी आशा की जाती है, इससे कुछ सीमा तक कमी पूरी हो जावेगी। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक २७५ मेगावाट अतिरिक्त बिजली

Page No. 19

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)
उत्पादन-क्षमता बढ़ने की आशा थी, किन्तु इसकी तुलना में, राणा प्रतापसागर तथा सतपुड़ा परियोजनाओं में अनिवार्य विलम्ब के कारण, केवल ४८ मेगावाट उत्पादन-क्षमता बढ़ी है। यह फिर भी सन्तोष का विषय है कि ग्रामीण विद्युतीकरण में निर्धारित लक्ष्यों से अधिक उपलब्धि हुई है। ३०३ बस्तियों के विद्युतीकरण के लक्ष्य की तुलना में इस योजना के अन्त तक १,०२७ बस्तियों में बिजली पहुँच चुकेगी जिससे ६,७२१ कुओं को बिजली मिलेगी। इस कार्यक्रम को अगली योजना की अवधि में भी उच्च प्राथमिकता दिये जाने का विचार है। सरकार अधिक से अधिक डिजल जेनरेटिंग सैट प्राप्त करने का प्रयास करेगी ताकि महत्वपूर्ण बिजली-भार केन्द्रों में स्थिति को सुगम किया जा सके।

४०. सहकारिता आन्दोलन की प्रगति संतोषजनक रही। पिछले वर्ष की अपेक्षा न केवल समितियों की संख्या में ही वृद्धि हुई, अपितु सदस्य संख्या तथा अंशपूंजी भी बढ़ी है। चालू वर्ष में लगभग ६ करोड़ रुपये बहुद्देशीय सहकारी समितियों द्वारा वितरित किये जा चुके हैं। उपभोक्ता सहकारितायें भी अच्छी प्रगति कर रही हैं। इस उद्देश्य से कि किसान को अपनी आवश्यकतानुसार, न कि बन्धक के रूप में प्रस्तुत की जाने वाली सम्पत्ति के मूल्य के अनुसार, ऋण मिल सके 'फसल ऋण प्रणाली' की नई ऋतु-ऋण योजना लागू किया जाना प्रस्तावित है। सहकारिता आन्दोलन को सशक्त बनाने तथा आन्दोलन के निरर्थक भाग को समाप्त करने के लिए उन समितियों के अतिरिक्त जो कि अपना आर्थिक व्यवस्थापन करने में सक्षम हैं शेष सब समितियों को भंग करने का निर्णय लिया गया है। सरकार ने ५० पंचायत समितियों में निदेशक आधार पर अकाल सहायता तकावी के अतिरिक्त सारे कृषि ऋण सहकारी समितियों के मारफत देने का निर्णय लिया है। सरकार का अन्तिम उद्देश्य ऐसे सब ऋणों को इन समितियों के मारफत देने का है। बूंदी जिले में सहकारिता क्षेत्र में एक चीनी का कारखाना स्थापित करने का काम चालू कर दिया गया है।

४१. राज्य में सड़क निर्माण तथा सुधार के कार्य में प्रगति होती रही। तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुल ५,८३० किलोमीटर सड़कें बन चुकीं या सुधर चुकी होंगी। इसके अतिरिक्त सीमा-क्षेत्र में सड़कें बनाने का एक वृहद् कार्यक्रम केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत किया गया है। इन सड़कों में से कुछ सड़कें राज्य सरकार द्वारा बनाई जावेंगी तथा शेष सड़कें केन्द्रीय सरकार द्वारा। राज्य सरकार द्वारा पहले ही इस कार्य को सम्पादित करने के लिए एक विशेष निर्माण-खण्ड (डिवीजन) की स्थापना कर दी गई है तथा कुछ सड़कों पर कार्य चल रहा है। इन सड़कों में से कुछ सड़कें राज्य के आर्थिक विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होंगी।

४२. चालू वर्ष में भी शिक्षा के क्षेत्र में विकास की गति बनाई रखी गयी। माध्यमिक पाठशाला स्तर पर कक्षा ६ से ८ तक ६० नयी उप-श्रेणियां खोली गईं। उच्च-माध्यमिक स्तर पर १२ अशासकीय पाठशालाओं को माध्यमिक पाठशालाओं में बदला गया तथा ५ अशासकीय उच्च विद्यालयों को उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में बदला गया। सरकारी पाठशालाओं में

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

कक्षा ६ से ११ तक २० नयी उप-श्रेणियां खोली गईं। विज्ञान की शिक्षा पर अधिक जोर दिये जाने के फलस्वरूप वर्तमान उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक पाठशालाओं में विज्ञान एवं गणित के ४० नये पाठ्यक्रम खोले गये। इसके अतिरिक्त १७ अन्य पाठ-शालाओं में विज्ञान के पाठ्यक्रम चालू किये गये। यह अनुमान किया जाता है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में पाठशाला जाने वालों की प्रतिशत ६ से ११ वर्ष के वयक्रम में ५४, ११ से १४ वर्ष के वयक्रम में २१ तथा १४ से १७ वर्ष के वयक्रम मे १० होगी, जबकि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में यह प्रतिशत क्रमशः ४०.६, १४.४ तथा ६.८ थी। अध्यापन के स्तर को ऊंचा करने तथा अध्यापकों की कार्य-स्थितियों को सुधारने के लिए भी कदम उठाये गये। द्वितीय तथा तृतीय वर्गों के अध्यापकों की वरिष्ठता–निर्धारण के लिए सिद्धान्त निश्चित कर दिये गये हैं। द्वितीय वर्ग के अध्यापकों की वरिष्ठता–सूची ऐतराज मांगने के लिए प्रकाशित कर दी गई है तथा तृतीय वर्ग के अध्यापकों की सूची शीघ्र ही प्रकाशित की जावेगी। तृतीय वर्ग में बिना प्रशिक्षण के अध्यापकों की भरती बन्द कर दी गई है, तथापि अध्यापक प्रशिक्षण के लिए सुविधायें दी जा रही हैं। अध्यापकों को उच्चतर व्यावसायिक योग्यता प्राप्त करने के लिए अग्रिम वेतन-वृद्धि के रूप में प्रोत्साहन दिया जाता है। विज्ञान के अध्यापकों को उच्चतर प्रारम्भिक वेतन दिया जाता है। कन्याओं की शिक्षा के क्षेत्र में कन्याओं को पाठशाला जाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु कदम उठाये गये हैं। आलोच्य वर्ष में १२० छात्र-वृत्तियां २५ रु० प्रति माह ६०० उपस्थिति छात्रवृत्तियां १५ रु. प्रति माह, तथा ७५० छात्रवृत्तियां १५) रु० प्रति छात्रा पुस्तकें खरीदने के लिए दी गईं। भरती-क्षमता डिग्री स्तर पर ३८५ से ६७० तथा डिप्लोमा स्तर पर ७६० से १,१८० बढ़ा कर तकनीकी शिक्षा के लिए अतिरिक्त सुविधायें प्रदान की गईं। संस्कृत विश्व–विद्यालय समिति की रिपोर्ट प्राप्त हो गई है। समिति की मुख्य सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिए जो कदम उठाये जा सकते हैं वे सरकार के विचाराधीन हैं।

४३. चिकित्सा के क्षेत्र में सरकार की नीति प्रत्येक पंचायत समिति क्षेत्र में एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र खोलने की है। इस लक्ष्य की लगभग पूर्ति हो चुकी है, क्योंकि अब तक २२६ पंचायत समितियों में प्राथ-मिक चिकित्सा केन्द्र खोले जाने की व्यवस्था की जा चुकी है। वर्ष १९६५-६६ में १८ प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र खोलने के लक्ष्य की तुलना में १५ केन्द्र अब तक खोले जा चुके हैं। तीसरी पंचवर्षीय योजना में २५ डिस्पे-न्सरी खोलने का लक्ष्य पूरा हो चुका है। डॉक्टरों की कमी को पूरा करने के लिए अजमेर तथा जोधपुर में २ नये मेडिकल कॉलेज खोले गए हैं। मेडिकल कालेजों की कुल भरती-क्षमता तीसरी योजना की अवधि में २२० से बढ़कर ६३५ हो गई है।

४४. महत्ता की दृष्टि से परिवार नियोजन केवल खाद्य उत्पादन के बाद आता है। गरीबी, बेरोजगारी तथा खाद्य समस्या का स्थायी हल परिवार नियोजन द्वारा ही हो सकता है। अतः हमें चौथी योजना में तीसरी योजना की अपेक्षा इस विषय पर अत्यधिक ध्यान देना होगा। इस कार्यक्रम के पक्ष में जन-मानस बनाना होगा और इसके लिए मैं आप सबके सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

४५. आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा क्षेत्र में विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया तथा इस योजना की अवधि में कुल ३२५ औषधालय खोले गये।

४६. सारे राज्य में ग्रामीण जल-प्रदाय कार्यक्रम के मास्टर प्लान बनाने का कार्य सम्पूर्ण हो गया है तथा मास्टर प्लान भारत सरकार को प्रस्तुत कर दिया गया है। राज्य के ७ जिलों जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, नागौर, चूरू, बीकानेर तथा जोधपुर में पीने के पानी के २५० नल कूप लगाने की केन्द्रीय योजना पर काम चालू हो गया है। तीसरी योजना के प्रारम्भिक चार वर्षों में ५१ नगरों तथा ५६ गांवों में जल प्रदाय योजनाएं पूरी हो गई हैं तथा चालू वर्ष में १८ नगरों तथा ३३ गांवों में जल-प्रदाय योजनायें पूरी हो जावेंगी।

४७. समाज के पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए पर्याप्त ध्यान दिया जाता रहा; ८०० परिवारों को गृह निर्माण के लिए तथा १४० परिवारों को पीने के पानी के कुए बनाने हेतु आर्थिक सहायता दी गई। राज्य भर के विभिन्न छात्रावासों में ७,००० छात्र छात्राओं को रखा गया तथा ३,६०० विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी गईं। कृषि भूमि के आवंटन में अनुसूचित जाति तथा जन-जातियों को प्राथमिकता दी गई है एवं दी जा रही है। उदयपुर में आदिवासी समस्याओं के अध्ययन के लिए एक आदिवासी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान खोला गया है।

४८. राज्य सरकार द्वारा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के लिए ४३८.४० करोड़ रुपये व्यय करने के प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये थे। योजना आयोग ने इसे अन्तिम स्वरूप देने का कार्य स्थगित कर दिया है। तथापि वर्ष १९६६–६७ की योजना बन गई है जिसकी उच्चतम व्यय-सीमा ३६.६६ करोड़ रुपये रखी गई है। चतुर्थ योजना के प्रथम वर्ष का सम्पूर्ण चतुर्थ पंचवर्षीय योजना से वही अनुपात नहीं रहेगा जो कि सामान्य परिस्थितियों में रहता। वित्तीय साधनों के अत्यधिक सीमित होने के कारण १९६६-६७ की वार्षिक योजना में मुख्य रूप से कृषि उत्पादन, सिंचाई एवं बिजली पर जोर रहेगा। वर्तमान कुए जो काम में नहीं आ रहे हैं उन्हें गहरा करने एवं मरम्मत करने पर अधिक जोर दिया जावेगा ताकि अपेक्षाकृत कम लागत पर अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके। इस प्रयोजन से राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड को सुप्रवाही एवं सशक्त बनाया जा रहा है। राजस्थान नहर के कार्य को संभालने के लिए एक केन्द्रीय अधिकरण के निर्माण हेतु भारत सरकार से बातचीत चल रही है; और यह आशा की जाती है कि शीघ्र ही प्रस्तावित अधिकरण का संगठन हो जायगा।

४९. साधनों के विकास के लिए नई सम्भावनाओं का अन्वेषण परम आवश्यक है। शासकीय व्यय में मितव्ययता की भावना अपनाई जा रही है तथा कर्मचारी व्यवस्था, राजकीय इमारतों के संधारण, फर्नीचर आदि के सम्बन्ध में दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जा रहा है। सरकार ने एक मितव्ययता समिति बनाई है तथा प्रत्येक विभाग द्वारा किये जाने वाले व्यय का इस समिति द्वारा परीक्षण किया जा रहा है।

५०. पिछली दशाब्दी में, प्रशासन को अधिक कुशल एवं सहानुभूतिपूर्ण बनाने की दृष्टि से प्रशासन की प्रक्रियाओं के निरन्तर

Page No. 22

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

मूल्यांकन करने की राज्य सरकार की नीति रही है। पिछले वर्षों में अपने आकार-प्रकार से निरन्तर बढ़ते हुए कर्त्तव्यों को निभाने के लिए प्रशासन को उपयुक्त रूप से सक्षम बनाने की दृष्टि से कई कदम उठाये गये है। राज्य कर्मचारियों को व्यवस्थापन एवं प्रशासन के प्रगतिशील सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सुविधाएं देने पर बल दिया गया है। पिछले वर्षों में उठाये गये कदमों का प्रशासनिक सुधार समिति द्वारा सिंहावलोकन किया गया। कुछेक महत्वपूर्ण कदम निम्नांकित हैं—

(१) कार्य-कुशलता को पुरस्कृत करने तथा उत्तम कार्य के लिए प्रोत्साहन देने के लिए सरकार ने पदोन्नति से भरे जाने वाले स्थानों में से ५० प्रतिशत स्थानों को केवल योग्यता के आधार पर भरे जाने का निर्णय लिया है।

(२) जो राज्य कर्मचारी विशेष महत्व का मौलिक कार्य या अनुसन्धान कार्य करें या कोई क्रियात्मक उपयोगिता का आविष्कार करें उन्हें योग्यता वेतन दिये जाने के नियम बनाये गये हैं।

(३) अयोग्य कर्मचारियों को, जो विभागीय कार्य-संचालन में बाधा हैं, हटाने के लिए अनिवार्य सेवा-निवृत्ति की प्रणाली लागू की गई है। इस उद्देश्य से किसी राज्य कर्मचारी के सेवा-निवृत्ति-वय तक पहुंचने से पूर्व सेवा-काल में तीन बार क्षमता परीक्षण किया जावेगा।

(४) शीघ्र एवं अविलम्ब कार्य-सम्पादन सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाये गये हैं। प्रत्येक स्तर पर कागजों के निपटारे के लिए समय-सीमा निर्धारित की गई है।

(५) व्यवस्था एवं पद्धति अनुभाग को अध्ययन-आधारित बनाने की दृष्टि से सशक्त बनाया गया है।

५१. प्रशासन की प्रणालियों के निरंतर मूल्यांकन के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक प्रशासन स्थायी समिति का निर्माण किया गया है। जन अभियोग निराकरण विभाग द्वारा सामान्य जनता तथा राज्य कर्मचारियों को उनके मामलों के शीघ्र निपटारे में सहायता दी जा रही है।

५२. राजस्व विधि आयोग को वर्तमान भू-धारण एवं भाटक प्रणाली का परीक्षण करने, अब तक हुए भूमि सुधारों तथा भाटक-विधि का प्रभाव आंकने तथा वर्तमान विधि-नियमों में संशोधन एवं सरलीकरण प्रस्तावित करने का कार्य सौंपा गया था। आयोग के प्रतिवेदन प्राप्त हो गये हैं तथा वे विचाराधीन हैं।

५३. पंचायती राज अपने अस्तित्व के सातवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस अवधि में इन संस्थाओं के दो आम चुनाव हो चुके हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि पंचायती राज ने एक नये ग्रामीण नेतृत्व को जन्म दिया है जो अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति सजग है। यह बात हाल की संकटकालीन स्थिति में पर्याप्त रूप से प्रमाणित हो चुकी है जब कि इन संस्थाओं ने सड़कों, पुलों तथा रेल की पटरियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भाग लिया। कृषि विकास के क्षेत्र में भी ये संस्थायें महत्वपूर्ण भाग ले रही हैं। इन्हें सशक्त बनाने तथा एक आदर्श स्थानीय शासन संस्था

(डा० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)

बनाने के उद्देश्य से, जैसा कि अभिप्रेत है, सरकार द्वारा पंचायती राज का निरन्तर सिंहावलोकन किया जा रहा है।

५४. सरकार ने यह निर्णय लिया है कि २६ जनवरी, १९६८ तक शासन तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों का सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में होने लगेगा। हिन्दी में कार्य की व्यवस्थित परिणति सुनिश्चित करने के लिए भाषा विभाग स्थापित किया गया है। यह विभाग तकनीकी, कानूनी तथा व्यावसायिक परिभाषिक शब्दावली का अनुवाद करने में अन्य विभागों की कठिनाइयों को हल करने का प्रयास कर रहा है।

५५. सरकार जनता को एवं उसके कर्मचारियों को बढ़ते हुए मूल्यों से होने वाली कठिनाइयों के प्रति सजग है। यह स्थिति अन्य कारणों के साथ साथ हाल के वर्षों में निरन्तर वर्षा की कमी के कारण पैदा हुई है। यह स्थिति सारे देश के लिए चिन्ता का विषय बन गई है तथा केन्द्रीय तथा राज्य स्तर पर सरकार इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है। राज्य कर्मचारियों के सम्बन्ध में यह अनुभव किया गया है कि नकद रूप में दी गई कोई भी सहायता उसके साथ साथ अथवा बाद में होने वाली मूल्यों में वृद्धि में विलीन हो जाती है। अपने कर्मचारियों को वास्तविक सहायता पहुँचाने के लिए सरकार ने उपभोक्ता भण्डारों के माध्यम से उन्हें दैनिक उपयोग की वस्तुयें उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। यह भण्डार सब नगरों तथा तहसील मुख्यालयों पर अक्टूबर, १९६६ के अन्त तक खोल दिये जायेंगे।

५६. इस सत्र का मुख्य कार्य, जिसके लिए आप सबको यहां आमन्त्रित किया गया है, आगामी वित्तीय वर्ष में राज्य की वित्तीय आवश्यकताओं पर विचार करना तथा इस हेतु आवश्यक कानून पारित करना है। ऐसे अन्य कानूनों को पारित करने में भी, राज्य को समाजवादी समाज-व्यवस्था की ओर प्रगति के लिए आवश्यक हों, जिसके लिए यह सरकार कृत-संकल्प है, आप निस्सन्देह अपने अनुभव एवं बुद्धि का उपयोग करेंगे।

५७. मैंने, यह सरकार जिन कार्यों में संलग्न रही है उनका सिंहावलोकन तथा जो कार्य अभी करने हैं, उनका संकेत प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सरकार को आपके मार्ग-दर्शन, परामर्श एवं सहयोग की आवश्यकता रहेगी। मेरी कामना है आप अपना कर्त्तव्य सफलतापूर्वक निभायें !

जय हिन्द।

शुद्धि-पत्र

[शनिवार, २६ फरवरी, १९६६]

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
१	२	३	४
५	अन्तिम से १	श्री ला बहादुरजो	श्री लालबहादुरजी
६	२०	चाहए	चाहिए
६	१३	यहा	यह
,,	अन्तिम से ६	सम्मानजनकन	सम्मानजनक न
११	२१	नही किया	नहीं किया
,,	२६	को हमें	को
१४	१५	रुक गया था	झुक गया था
,,	१६	भा	भी
१८	अन्तिम से २	श्रा शास्त्री जी	श्री शास्त्रीजी
२१-२२ व २३-२४	शीर्षक	परिशिस्ट	परिशिष्ट
२१-४६	शीर्ष	(डॉ० सम्पूर्णानन्द राज्यपाल)	(डॉ० सम्पूर्णानन्द, राज्यपाल)
२३	अन्तिम से ४	इस वष	इस वर्ष
२५	७	पेय—जल को	पेय—जल की
,,	१२	की गये	की
२७	प्रथम से ऊपर		के सुरक्षित भण्डार (बफर स्टाक) बनाये
२६	प्रथम	उत्पाद को	उत्पादन को
,,	२१	कार्यों क	कार्यों के
३१	६	अनुद न दिया	अनुदान दिया
३१	१२	रूप के	रूप से
४०	४	डिप् ोमा	डिप्लोमा
,,	५	तकनो ो	तकनीकी
४४	१३	वि़ि	विधि